Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 : Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

जून/2022 ई०

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

JUNE-2022

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

फ़रवरी 2022 में आयोजित मसरूर ट्रॉफ़ी क़ादियान के अवसर पर श्री रफ़ीक़ अहमद मालाबारी साहब वकीले आला तहरीके जदीद से श्री अब्दुल माजिद साहब इनाम लेते हुए।

फ़रवरी 2022 में आयोजित मसरूर ट्रॉफ़ी क़ादियान के अवसर पर इनामात तक्सीम करते हुए श्री मुहम्मद करीमुद्दीन शहीद साहब, सदर सदर अंजुमन अहमदिय्या क़ादियान ।

31.3.2022 को खबली (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित तरबियती कैंप मज्लिस अंसारुल्लाह कांगड़ा में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य।

31.3.2022 को खबली (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित तरबियती कैंप मज्लिस अंसारुल्लाह कांगड़ा के स्टेज का एक दृश्य ।

27-02-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह सैंट थॉमस (तमिल नाडु) की ओर से आयोजित तरबियती इजलास में हाज़िर अंसार सदस्यों का एक दृश्य।

27-02-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह सैंट थॉमस (तमिल नाडु) की ओर से आयोजित तरबियती इजलास के स्टेज का दृश्य ।

27-02-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह सैंट थॉमस (तमिल नाडु) की ओर से श्री डॉक्टर N.R जयकुमार M.D.Homoeo को पवित्र क़ुरान भेंट करते हुए ।

27-02-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह सैंट थॉमस (तमिल नाडु) की ओर से आयोजित स्वास्थ्य देखभाल जागरूकता (हिफ़ज़ाने सेहत) पर भाषण देते हुए श्री डॉक्टर N.R जयकुमार M.D. Homoeo।

22-04-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह पटना (बिहार) की ओर से ग़रीबों को राशन देते हुए एक दृश्य ।

24-04-2022 को मज्लिस अंसारुल्लाह मुर्शिदाबाद (बंगाल) की ओर से आयोजित वक़ारे अमल का एक दृश्य ।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِهِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰهِ
سورۃ الصّف آیت ۱۵

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
ताहिर अहमद बेग
Ph. +91 99152 23313

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 250 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 20 जून 2022 **Issue - 6**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - रूस, यूक्रेन युद्ध से तीसरे विश्वव्यापि युद्ध का ख़तरा	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन दुनिया के मार्गदर्शन के लिए तर्बीयत के उच्च स्तर की ज़रूरत	6
वर्चोल मीटिंग	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ۭ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ○ (सूरत अल्हुजरात:आयत12)

अनुवाद - हे मोमिनो कोई क़ौम किसी क़ौम से उसे तुच्छ समझ कर हंसी मज़ाक़ न किया करे। मुम्किन है कि वह उनसे अच्छी हो और ना (किसी क़ौम की) औरतें दूसरी (क़ौम की) औरतें को तुच्छ समझ कर उनसे हंसी ठट्ठा न क्या करें। मुम्किन है कि वह (दूसरी क़ौम या हालात वाली औरतें) उनसे बेहतर हों और न तुम एक दूसरे पर तान किया करो और न एक दूसरे को बुरे नामों से याद किया करो क्योंकि ईमान के बाद इताअत से निकल जाना एक बहुत ही बुरे नाम का अधिकारी बना देता है (अर्थात दुराचारी का) और जो भी तौबा न करे वे अत्याचारी होगा।

दर्सुल हदीस

عَنْ اَبِیْ اُسَیْدٍ الْاَنْصَارِیِّ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَنَّہٗ سَمِعَ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ وَھُوَ خَارِجٌ مِنَ الْمَسْجِدِ فَاخْتَلَطَ الرِّجَالُ مَعَ النِّسَاءِ فِی الطَّرِیْقِ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لِلنِّسَاءِ :اِسْتَاْخِرْنَ فَاِنَّہٗ لَیْسَ لَکُنَّ اَنْ تَحَقَّقْنَ الطَّرِیْقَ عَلَیْکُنَّ بِحَافَّاتِ الطَّرِیْقِ فَکَانَتِ الْمَرْاَۃُ تَلْصَقُ بِالْجِدَارِ حَتّٰی اِنَّ ثَوْبَھَا لَیَتَعَلَّقُ بِالْجِدَارِ مِنْ لُّصُوْقِھَا بِہٖ ۔ (मस्नद अहमद भाग 4 पृष्ठ 273)

अनुवाद - हज़रत अबी उसीद अन्सारी रज़ि वर्णन करते हैं कि उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मस्जिद से बाहर जिस वक़्त औरतें गली में मर्दों के साथ मिलकर भीड़ की शक्ल में चल रही थीं यह फ़रमाते हुए सुना कि औरतें रास्ता के एक तरफ़ हो कर अर्थात फ़ुट-पाथ पर चलें। यह उचित नहीं कि वे रास्ता की रोक बन जाएं। अबू उसीद वर्णन करते हैं कि इस के बाद औरतें सड़क के एक तरफ़ हो कर दीवार के साथ साथ हो कर चला करतीं। कई बार तो वे इतना दीवार के साथ लग कर चलतीं कि उनके कपड़े दीवार के साथ अटक अटक जाते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

मर्द औरत से और औरत मर्द से पर्दा करे।

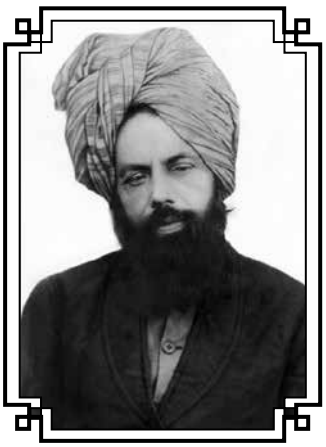

"यूरोप की तरह बेपर्दगी पर भी ये लोग ज़ोर दे रहे हैं लेकिन यह हरगिज़ उचति नहीं। यही औरतों की आज़ादी दुराचार तथा कदाचार की जड़ है जिन देशों ने इस प्रकार की आज़ादी को उचित रखा है। ज़रा उन की अख़लाक़ी हालत पर नज़र दौड़ाओ। अगर उस की आज़ादी और बेपर्दगी से उन की पवित्रता और पाकीज़गी बढ़ गई है तो हम स्वीकार लेंगे कि हम ग़लती पर हैं लेकिन यह बात बहुत ही साफ़ है कि जब मर्द और औरत जवान हों और आज़ादी और बेपर्दगी भी हो तो उन के सम्बन्ध किस क़दर ख़तरनाक होंगे। बुरी नज़र डालनी और नफ़स की भावनाओं से प्राय पराजित हो जाना इन्सान की विशेषता है। फिर जिस हालत में कि पर्दा में सीमा से बाहर निकल जाते हैं और दुराचार तथा कदाचार के करने वाले हो जाते हैं तो आज़ादी में क्या कुछ न होगा। मर्दों की हालत का अंदाज़ा करो कि वे किस तरह बेलगाम घोड़े की तरह हो गए हैं न ख़ुदा का ख़ौफ़ रहा है न आख़िरत पर विश्वास है। दुनियावी लज़्ज़ात को अपना उपास्य बना रखा है। अत: सबसे पहले ज़रूरी है कि इस आज़ादी और बेपर्दगी से पहले मर्दों की अख़लाक़ी हालत दरुस्त करो। अगर यह ठीक हो जाए और मर्दों में कम अज़ से इतनी शक्ति हो कि वह अपने नफ़सानी जज़बात के पराजित न हो सकें तो उस वक़्त इस बेहस को छेड़ो कि क्या पर्दा ज़रूरी है कि नहीं वर्ना मौजूदा हालत में इस बात पर ज़ोर देना कि आज़ादी और बेपर्दगी हो मानो बकरियों को शेरों के आगे रख देना है। इन लोगों को क्या हो गया है कि किसी बात के नतीजा पर ग़ौर नहीं करते। कम से कम अपने कांशनस से ही काम लें कि क्या मर्दों की हालत ऐसी परिवर्तन वाली है कि औरतों को बेपर्दा उन के सामने रखा जाए। क़ुरआन शरीफ़ ने (जो कि इन्सान की फ़ित्रत के तक़ाज़ों और कमज़ोरियों को समक्ष रखकर यथा योग्य शिक्षा देता है क्या उत्तम मार्ग धारण किया है قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ (अन्नूर: 31)कि तू ईमान वालों को कह दे कि वे अपनी निगाहें को नीचा रखें और अपने सुराख़ों की सुरक्षा करें। यह वह कर्म है जिससे उन के नफ़सों की पवित्रता होगी।

इस्लाम ने जो यह हुक्म दिया है कि मर्द औरत से और औरत मर्द से पर्दा करे। इस से उद्देश्य यह है कि इन्सान का नफस फिसलने और ठोकर खाने की हद से बचा रहे क्योंकि आरम्भ में इस की यही हालत होती है कि वह बुराइयों की तरफ़ झुका पड़ता है और ज़रा सी भी तहरीक हो तो बुराई पर ऐसे गिरता है जैसे कई दिनों का भूखा आदमी किसी लज़ीज़ खाने पर। यह इन्सान का फ़र्ज़ है कि इस का सुधार करे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 104,105 प्रकाशन 2003 ई)

सम्पादकीय रूस, यूक्रेन युद्ध से तीसरे विश्वव्यापि युद्ध का ख़तरा

NATO में यूक्रेन के शामिल होने की इच्छा के मस्ला को रूस अपने देश के लिए ख़तरा मानते देते हुए"विशेष फ़ौजी ऑप्रेशन" के नाम से रूस ने यूक्रेन पर 24 फरवरी 2022 ई से बाक़ायदा बमबारी शुरू कर दी। आज 14 मई 2022 ई तक 81 दिन हो रहे हैं। लेकिन यह जंग थमने का नाम नहीं ले रही। दोनों देश के प्रधान अपनी अपनी बात पर अड़े हैं। अब फ़िनलैंड और सिडनी भी NATO में शामिल होने के इच्छुक हैं। जबकि रूस का कहना है कि अब NATO का और अधिक बढ़ावा हमारे लिए सहन से बाहर है। इस तरह हालात दिन प्रतिदिन ख़राब होते जा रहे हैं। अगर वार्ता से मसला हल न हुआ तो रूस और यूक्रेन की यह जंग फैलते फैलते तीसरे विश्वव्यापि युद्ध पर समाप्त हो सकती है।

पहला विश्व युद्ध 28 जुलाई 1914 ई से 11 नवम्बर 1918 ई ज़्यादा तर यूरोप तक सीमित रहा लेकिन दूसरा विश्व युद्ध (1 सितम्बर 1939 ई से 2 सितम्बर 1945 ई) में यूरोप के इलावा एशिया के कई देश भी शामिल हुए। क़ुरआन-ए-करीम से मालूम होता है कि तीसरे विश्व युद्ध भी होगा। जिसके बाद इस्लाम का प्रभुत्व होगा। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो सूरत अल-मुतफ़्फ़फीनन की तफ़सीर में वर्णन फ़रमाते हैं

" कल्लअ के इस बार बार आने पर ग़ौर करने से एक और बात मालूम होती है कि यहां तीन बार कल्लअ कुफ़्र के वर्णन के बाद आया है और एक बार "कल्लअ" मोमिनों के वर्णन से पहले है। इस में इस तरफ़ इशारा मालूम होता है कि तीन झटके ईसाईयत की तबाही के लिए लगेंगे और चौथा झटका इस्लाम की मज़बूती का कारण होगा। बज़ाहिर, जहां तक अक़्ल काम करती है, यही मालूम होता है कि पहला विश्व युद्ध, जो 1918 में ख़त्म हुआ, पहला झटका था, जो ईसाईयत को लगा। अब दूसरी जंग, यह दूसरा झटका है। इस के बाद एक तीसरी विश्व युद्ध होगा, जो पश्चिम की तबाही के लिए तीसरा और आख़री झटका होगा। इस के बाद चौथा झटका लगेगा, जिसके बाद इस्लाम अपने उदय को पहुंच जाएगा और पश्च्मी क़ौमें बिल्कुल अपमानित हो जाएँगी, क्योंकि चौथे "कल्लअ" के बाद ही यह वर्णन आता है।"

(तफ़सीर कबीर भाग 7 पृष्ठ 306)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम फ़रमाते हैं

"याद रहे कि ख़ुदा ने मुझे आम तौर पर भूकम्पों की ख़बर दी है। कई उनमें क़यामत का नमूना होंगे और इतनी मौत होगी कि ख़ून की नहरें चलेंगी। इस मौत से परिंदे भी बाहर नहीं होंगे और ज़मीन पर इतनी तबाही आएगी कि इस दिन से कि इन्सान पैदा हुआ, ऐसी तबाही कभी नहीं आई होगी और प्राय स्थानों उलट पलट हो जाऐंगे कि मानो उनमें कभी आबादी न थी।"

(हकीकतुल वह्य, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 368)

हीरोशीमा और नागासाकी (जापान पर अमरीका एटम-बम गिराने के कारण से दूसरे विश्व युद्ध के बाद देशों के मध्य ऐटमी हथियारों की एक दौड़ शुरू हो गई क्योंकि हर किसी को पता था कि जिसके पास एटम-बम होगा जंग में पलड़ा उसी का भारी होगा।

अत: तीसरे विश्व युद्ध ख़ौफ़नाक ऐटमी जंग होगा। अब भी वक़्त है कि इन्साफ़ को स्थापित करके इस भयानक तबाही से दुनिया बच सकती है। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दुनिया को सचेत करते हुए फरमाते हैं

"दुनिया आजकल तबाही की तरफ़ जा रही है हमें उस की फ़िक्र है और होनी चाहीए कि इन्सानियत को बचाना भी हमारा काम है। यह सब इस लिए हो रहा है कि इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे नहीं किए जाते दूसरों के हुक़ूक़ का ध्यान नहीं रखा जाता। अगर ओहदों की पाबन्दी होती ,अगर हर सतह पर इन्साफ़ करने और हुक़ूक़ अदा करने की कोशिश होती, इन्साफ़ को हक़ीक़ी रंग में स्थापित किया जाता , अगर हुक़ूक़ की अदायगी का हक़ अदा किया जाता तो न हम इराक़ की तबाही देखते, न सीरिया की तबाही देखते ,न लीबिया की तबाही देखते ,न यमन की तबाही देखते ,न अफ़ग़ानिस्तान की तबाही देखते। जो यह हाल हुआ है आजकल उनका यह न देखते। और न अब यह यूक्रेन में जो कुछ हो रहा है इस को देखते।"

(ख़ुत्बा ईदुल-फ़ितर 2 मई 2022 ई)

हमारी दुआ है कि इन्साफ़ क़ायम हो ताकि इस तबाही से दुनिया सुरक्षित रहे।

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

दुनिया के मार्गदर्शन के लिए तर्बीयत के उच्च स्तर की ज़रूरत

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल-अज़ीज़ बार-बार इस बात की तरफ़ हमें नसीहत कर चुके हैं कि तीसरी विश्वयुद्ध के बाद दुनिया के मार्गदर्शन की बड़ी ज़िम्मेदारी हम अहमदियों की होगी। क्या हमारी तर्बीयत का स्तर इस योग्य हो चुका है कि हम दुनिया की राहनुमाई का बोझ उठा सकें। चूँकि तीसरे विश्वयुद्ध के बादल मंडला रहे हैं। इस लिए हम अन्सार विशेष रूप से अपनी और नई नस्ल की तर्बीयत पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। सबसे पहले तो मुक़ामी से मुल्की सतह के समस्त उहदेदार नेक नमूना स्थापित करने की ज़रूरत है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं

"अत: उमरा, सदूर सबसे पहले अपनी आमिला के सामने भी और जमाअत के लोगों के सामने भी अपने नमूने क़ायम करें। सेक्रटररिया तर्बीयत हैं जिनके सपुर्द तर्बीयत का काम है और तर्बीयत का काम उसी वक़्त सही रंग में हो सकता है जब नमूने क़ायम हों। जो काम करने वाला है, जिसकी ज़िम्मेदारी है, दूसरों को नसीहत करने वाला है तो ख़ुद भी इन कामों पर अनुकरण करने वाला हो। अत: सेक्रटरयान तर्बीयत भी जमाअत के लोगों सामने अपने नमूने क़ायम करें कि जमाअत की तर्बीयत की ज़िम्मेदारी उन पर अनिवार्य होती है।" (ख़ुत्बा जुम्अ: 15 जुलाई 2016 ई)

जो नासिर पांचों समय की नमाज़ के साथ साथ अल्लाह तआला के आदेशों का पाबन्द हो वह जमाअत के लिए न केवल लाभदायक वजूद साबित होगा बल्कि वह दूसरों की तर्बीयत का भी कारण होगा। इस लिए तर्बीयत के विभाग को सक्रिय करने की नसीहत करते हुए हुज़ूर अनवर फ़रमाते हैं

"मैं कई अवसरों पर वर्णन कर चुका हूँ कि अगर शोबा तर्बीयत सक्रिय हो जाए तो बहुत से दूसरे विभागों के काम अपने आप ठीक हो जाते हैं। जितने जमाअत के लोगों की तर्बीयत का स्तर ऊंचा होगा इतना ही दूसरे विभागों का काम आसान होगा। जैसे सैक्रेटरी माल का काम आसान होगा। सैक्रेटरी उमूरे आमा का काम आसान होगा। सैक्रेटरी तब्लीग़ का काम आसान होगा। इसी तरह दूसरे शोबों का, क़ज़ा-ए-का काम आसान होगा।"(उसी तरह)

तीसरे विश्व युद्ध के बाद लोग बड़ी तेज़ी से इस्लाम की तरफ़ रुजू करेंगे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं

"अत: तीसरे विश्वयुद्ध तबाही का चरम, इस्लाम के विश्वव्यापि ग़लबा और चरम का आरम्भ होगा और इस के बाद बड़ी तेज़ी के साथ इस्लाम सारी दुनिया में फैलना शुरू होगा और लोग बड़ी संख्या में इस्लाम स्वीकार कर लेंगे और यह जान लेंगे कि सिर्फ इस्लाम ही एक सच्चा मज़हब है और यह कि इन्सान की मुक्ति केवल हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो के पैग़ाम के माध्यम हासिल हो सकती है।"

(अमन का पैग़ाम और एक चेतावनी, पृष्ठ 10 1967 ई स्थान लन्दन)

दुनिया की क़ियादत अहमदियत ने करनी है। यह एक न बदलने वाली हक़ीक़त है कि इस्लाम का ग़लबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम के द्वारा मुक़द्दर है। अत: आप फरमाते हैं।

"न बुत रहेंगे, न सलीब रहेगी और समझदार दिलों पर से उनकी महानता उठ जाएगी और ये सब बातें झूठ दिखाई देंगी और सच्चे ख़ुदा का चेहरा स्पष्ट हो जाएगा.....ख़ुदा अपने सम्मान्नीय निशानों के साथ और अपने अत्याधिक पवित्र मआरिफ़ के साथ और बहुत मज़ूत दलीलों के साथ दिलों को अहमदियत की तरफ़ फेर देगा और वही मुनकिर रह जाएंगे जिन के दिल कठोर हो चुके हैं। ख़ुदा एक हवा चलाएगा जिस तरह बहार के मौसम की हवा चलती है और एक रूहानियत आसमान से नाज़िल होगी और विभिन्न शहरों और देशों में बहुत जल्द फैल जाएगी।" (किताबुल बरिया रुहानी ख़ज़ाइन भाग 13 पृष्ठ 312)

अत: मज्लिस अन्सारुल्लाह के समस्त ओहदेदारान अन्य अन्सार और जमाअत लोगों के लिए एक पवित्र नमूना स्थापित करने की ज़रूरत है। दुआ है कि अल्लाह तआला हमें समय के ख़लीफ़ा की हिदायतों पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

अताउल मुजीब लोन
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मज्लिस आमला अन्सारुल्लाह हॉलैंड की वर्चोल मीटिंग

दिनांक 15 अगस्त 2021 ई स्थान मस्जिद बैयतुन्नूर,नन स्पैट, हॉलैंड

15 अगस्त 2021 ई को इमाम जमात अहमदिया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने अराकीन नैशनल आमिला मजलिस अन्सारुल्लाह हॉलैंड से ऑनलाइन मुलाक़ात फ़रमाई

हुज़ूर अनवर इस मुलाक़ात में अपने दफ़्तर इस्लामाबाद (टेलफ़ोर्ड) से रौनक अफ़रोज़ हुए जबकि मैंबरान मज्लिस आमला अन्सारुल्लाह ने इस ऑनलाइन मुलाक़ात में मस्जिद बैत उल-नूर कम्पलैक्स नन स्पैट Nuspeet) हॉलैंड से शिरकत की

एक घंटे तक जारी रहने वाली इस मुलाक़ात में समस्त मज्लिस अन्सारुल्लाह के सदस्यों को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि वे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के सामने अपने विभागों की रिपोर्टें प्रस्तुत करें और राहनुमाई प्राप्त करें

हुज़ू अनवर ने अराकीन मज्लिस अन्सारुल्लाह को साइकिलिंग के बारे में ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया कि वह बाक़ायदगी से साईकिलिंग करें और अन्य खेलों में भी शामिल हुआ करें ताकि उम्र के बढ़ने से उनकी सेहत और fitness ठीक रहे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि उम्र बढ़ने के असर दिमाग़ी रवैय्या से पता चलते हैं। अगर कोई व्यक्ति सकारात्मक सोच से काम ले रहा हो और दिल का जवान हो तो इस की उमूमी सेहत और हालात पर साकारात्मक प्रभाव होगा।

क़ाइद साहिब तालीम से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि आप अन्सारुल्लाह को साल में कितनी किताबें पढ़ने के लिए देते हैं? उन्होंने बताया कि पहले तो ज़्यादा देते थे लेकिन इस बार एक किताब रखी है। अर्थात हकीकतुल वह्य। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि यह किताब एक साल में पढ़नी है या उस को दो तीन सालों में विभाजित किया है? इस पर क़ाइद तालीम ने बताया कि एक साल में। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि यह बताएं कि आमिला के मैंबरान में से कितनों ने पढ़ ली। पहले घर से शुरू करें। घर आपका आमला है। मुझे बताएं आमिला के मैंबरान ने पढ़ी? पहले तो आमिला से रिपोर्ट लें। सदर साहिब से शुरू करें और फिर बाक़ियों से पूछते जाएं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जब आमिला ने पढ़ ली तो फिर आप अपने ज़ईमों के पास जाएं। फिर देखें ज़ईमों ने पढ़ ली। फिर आप अपने नाज़िमीन के पास जाएं फिर देखें उन्होंने पढ़ ली। फिर आप अन्य ओहदेदार नासिर से पूछें। तो अगर आप आमिला के मैंबरान जो हैं हर स्तर पर उनसे किताबें पढ़वा लें या किसी प्रोग्राम में भी शामिल कर लें तो 60 प्रतिशत तो आपकी तजनीद का वैसे ही काम हो जाता है। बस आपकी आमिला जो है विभिन्न लेवलज़ की अगर वह एक्टिव हो जाएं तो 60 प्रतिशत काम तो आपका हो गया मसला ही नहीं रहता। मसला यह है कि हम सिर्फ घर बैठ के आर्डर कर देते हैं ख़ुद करते नहीं।

हुज़ूर अनवर ने क़ाइद तालीम से पूछा कि उन्होंने यह किताब कितनी पढ़ ली है और यह कि इस किताब के पहले हिस्से का विषय क्या है? इस पर उन्होंने बताया कि 70 प्रतिशत पढ़ ली है और पहले हिस्से में वह्य की किस्में वर्णन हुई हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए फ़रमाया कि इस का सार यह है कि ख़्वाबें देख के ज़्यादा ख़ुश न हो जाया करो। असल चीज़ नेकी और तक़्वा है। बहरहाल

आप अपने जो क़ाइदीन हैं उनसे रिपोर्ट भी लें कितनों ने पढ़ी। फिर ज़ईमों से लें और नाज़मीन से लें और अगर कहीं मुंतज़मीन हैं तो उनसे भी लें। और फिर दूसरे अंसार मैंबरान हैं मज्लिस के मैंबरान उनसे पूछें और अपने हर लेवल के ऊपर आपका जो नाज़िम तालीम है इस को एक्टिव करें कि वे रिपोर्ट दिया करे पता करे।

हुज़ूर अनवर ने हिदायात से नवाज़ा कि इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए ताकि हॉलैंड में इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा का प्रचार किया जा सके इसी तरह फ़रमाया कि मज्लिस अन्सारुल्लाह को अन्य ज़ेली तन्ज़ीमों और जमाअत की सतह पर अहमदिया मुस्लिम जमाअत के साथ मिलकर सामूहिक कोशिश करनी चाहिए ताकि बेहतरीन परिणाम निकल सकें

हुज़ूर अनवर ने मज्लिस अन्सारुल्लाह के ईसार विभाग के हवाला से मज्लिस अन्सारुल्लाह को उनकी ज़िम्मेदारीयों की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए फ़रमाया कि उन्हें अफ्रीक़ा के ग़ैर तरक़्क़ी वाले हिस्सों में वाटरपम्प और मॉडल वेलेज् (जिसमें स्थानीय देहाती आबादी को बुनियादी ज़रूरीयात ज़िंदगी मुहय्या की जाती हैं)की तामीर के बारे में मदद करनी चाहिए और एक प्रोजेक्ट का आरम्भ करना चाहिए।

मुलाक़ात के अन्त पर एक नासिर ने सवाल किया कि हमारी नैशनल आमिला के मैंबरान और इसी तरह लोकल स्तर पर भी जो आमिला के मैंबरान हैं उनके साथ विभिन्न अवसरों पर अन्सार का रवैय्या कई बार ऐसा होता है कि उनकी ज़रा हौसला तोड़ना हो जाता है उनको हौसला देने के लिए क्या करना चाहिए?

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अगर तो वे इन मैंबरान के लिए काम कर रहे हैं तो फिर तो हौसला तोड़ना जायज़ है और अगर वे ख़ुदा तआला के लिए काम कर रहे हैं तो हौसला तोड़ना नाजायज़ है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया पहले बच्चे तो नहीं हैं न अन्सार। माशा अल्लाह चालीस साल की मैच्योर (mature)उम्र के बाद अन्सार में दाख़िल होते हैं। इस के बाद अगर कोई किसी नासिर की तरफ़ से हौसला शिकनी हो भी जाती है, हौसला शिकनी होती है कई बूढ़ों की तरफ़ से जो बंदा 65 साल क्रास(cross) करता है न वह कई बार सुना भी देता है या फिर कई बार नौजवान अन्सार जो हैं उन की तरफ़ से भी हो जाती हो लेकिन उमूमन बड़ों की तरफ़ से होती है तो इस में आप लोग ये सोच रखें और हर एक को यह बताएं कि हमने ख़ुदा के लिए काम करना है और जब ख़ुदा तआला के लिए काम करना है तो फिर किसी दुनिया वाले की हौसलाशिकनी या आलोचना की पर्वा ही नहीं करनी चाहिए। कोई बच्चे तो नहीं आप। माशा अल्लाह चालीस साल की उम्र गुज़ार के पूरे मैच्योर हो चुके हैं इस में तो हौसलाशिकनी हो भी जाए तो क्या है। तो क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब अपने रिश्तेदारों को बुलाया तब्लीग़ के लिए नबुव्वत के स्थान मिलने के बाद तो रोटी खा के सारे दौड़ गए थे हौसलाशिकनी कर दी थी तो क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हार मान ली थी। उन्होंने अगली बार फिर थोड़े अरसा के बाद दुबारा दावत की दुबारा पहले अपना पैग़ाम पहुंचाया फिर उनको रोटी खिलाई उस के बाद भी वे रोटी खा के चले गए, ढीट किस्म के लोग, तो क्या हौसलाशिकनी हो गई। तो हमें तो मज़बूत आसाब के मालिक होना चाहिए। कारकुनान, हर आदमी और चाहे अपनों की तरफ़ से हो या ग़ैरों की तरफ़ से हो परवाह ही नहीं करनी चाहिए और यह सोच रखनी चाहिए कि हम ख़ुदा तआला के लिए काम कर रहे हैं। जब ख़ुदा तआला के लिए काम कर रहे हैं तो फिर किसी इन्सान की प्रशंसा या बुरा भला कहने की परवाह ही नहीं करनी चाहिए। जब अल्लाह तआला ने हमारे काम का बदला देना है तो बस फिर इस से बदला मांगें फिर बंदों से क्यों किसी किस्म का reward आप माँगना चाहते हैं।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 31अगस्त 2021 ई)

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत 2022 के इज्तिमा में

शारीरिक एवं बौद्धिक प्रतिस्पर्धाओं की रूप रेखा

ज्ञान वर्धक मुक़ाबले

1- **मुक़ाबला हुस्ने क़िरअत** - (समय 2 मिन्ट निश्चित है)

विशेष श्रेणी-(मुबल्लिग़ीन किराम) प्रथम श्रेणी-(ग्रेजुएट, मुअल्लिम अन्सार)। द्वित्तीय श्रेणी- (ग्रेजुएट से कम अन्सार)। मुक़ाबले से पहले टैस्ट लिया जाएगा, तिलावत देखकर करने की अनुमति होगी ताकि कोई नासिर ग़लत न पढ़े।

निम्नलिखित सूरतों की तिलावत की जा सकती है-

1- सूर: अलबक़र: पहला रुकूअ

2- सूर: अलबक़र: आयत-22 से 24 आयतें

3- सूर: हाम मीम सिज्दा पहला रुकूअ

4- सूर: रहमान आयात 1 से 14

5- सूरह अल्जुम्अ: आयत 1 से 5

6 सूर: अल क़दर सम्पूर्ण

2 - मुक़ाबला हिफ़्ज़-ए-क़ुर्आन - सूर: अलबक़रा की आरम्भिक 17 आयतें, अन्तिम पारा अम्म की अन्तिम 20 सूरतें (सूर: अत्तीन से सूर: अन्नास तक)

(यह मुकाबला केवल दोयम मेयार के लिए विशेष रूप से है।)

3 - मुक़ाबला नज़्म ख़्वानी (कविताएँ)- (समय 2 मिन्ट) प्रथम श्रेणी, द्वित्तीय श्रेणी के लिए (केवल निम्नलिखित कविताओं में से ही कोई एक कविता मुक़ाबले में पढ़ी जाए)

1- (दुर्रे समीन से) - जमालो हुस्ने क़ुर्आं नूरे जाँ हर मुसलमाँ है।

2- नूरे फ़ुर्क़ां है जो सब नूरों से अजला निकला

3- ईमान मुझ को दे दे इरफान मुझ को देदे। (कलाम-ए-महमूद से)

4- कलाम हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब(क़ुर्आन सब से अच्छा क़ुरआन सब से प्यारा)

4- मुक़ाबला तक़रीर - (समय 3 मिन्ट) प्रथम श्रेणी, द्वित्तीय श्रेणी तथा विशेष श्रेणी- विषय -

1- क़ुरआन और साईंस।

2- तिलावत क़ुरआन का महत्व।

3- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और क़ुर्आन की सेवा।

4- ख़िलाफत अहमदिया और क़ुरआन।

5- हिफाज़त क़ुरआन।

6- क़ुरआन मजीद की अन्य धार्मिक पुस्तकों पर प्राथमिकता।

7- क़ुर्आन मजीद एक सम्पूर्ण जीवन शैली

8- क़ुर्आन का प्रकाशन और हमारा कर्तव्य।

9- क़ुर्आन मजीद और नफस की पवित्रता।

10. इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह और मज्लिस अन्सारुल्लाह।

5- मुक़ाबला क़ुइज़- (निसाब) कश्ती नूह सम्पूर्ण किताब, ख़िताब हुज़ूर-ए-अनवर- (1)11 जुलाई 2014 (2)21 अक्तूबर 2005 ई, सामान्य ज्ञान (जी.के.)

आवश्यक निर्देश - समस्त व्यक्तिगत मुकाबलों में 50 से कम तज्नीद की मज्लिस से 2 अन्सार और 50 से अधिक तज्नीद की मजलिस से 4 अन्सार मुक़ाबलों में भाग लेंगे ।

शारीरिक व्यायाम के मुक़ाबले

1- प्रथम श्रेणी -

(क) 50 मीटर दौड़ (ख)म्यूज़िकल चियर (ग) रिंग (घ) बैड मिन्टन (स)धीमे साईकिल चलाना।

2- द्वित्तीय श्रेणी -

(अ) 100 मीटर दौड़ (ब) रिंग (ज)बैड मिन्टन (द) साईकिलरेस

3- संयुक्त श्रेणी - (अ) वॉली बॉल (ब) रस्सा कशी (ज)म्यूज़िकल चेयर (द)निशाना ग़ुलेल।

.....